ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

बिहार में राष्ट्रीय आन्दोलन और दलित समुदाय (1917-1947)

डॉ. कमल कुमार राम

(इतिहास)

राजनीतिक, सांस्कृतिक, समाजीकरण एवं राजनीतिक नेतृत्व के कारण दलितों के आंदोलन को एक नया आयाम प्राप्त हुआ। यह राजनीतिक चेतना तथा राजनीतिक वर्चस्व से संबंधित है, किन्तु इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ही तैयार हो गई थी। खासकर बिहार में 1930 के दशक से प्रारंभ अस्पृश्यता निवारण आंदोलन ने स्वाधीनता-संघर्ष और दलित-चेतना दोनों को गहरे तौर पर प्रभावित किया। 1930 के दशक के आस-पास से अस्पृश्य जातियों ने अपने आपको 'दलित' कहना शुरु किया। यह शब्द उपनिवेशवादियों के द्वारा प्रयुक्त उत्पीड़ित वर्ग, उसकी जगह 1936 में लाए गये शब्द "अनुसूचित जाति" और गाँधी के शब्द हरिजन (हरि के जन) अपेक्षा तथा हिन्दू भारत में उनकी सामाजिक, आर्थिक, स्थिति को कहीं बेहतर ढंग से सामने रखता था। जैसा कि शब्द 'दलित' से संकेत मिलना है। उनके प्रतिशोध की कोई भी समझ भारत में सामाजिक-संस्तरण और उत्पीड़न की एक विधि के रूप में जाति प्रथा का विकास की विवेचना से संबंधित है। वस्तुतः भारतीय पुनर्जागरण, धार्मिक सुधार आंदोलन, स्वामी विवेकानन्द तथा रामकृष्ण परमहंस एवं आर्य समाज आदि के आंदोलनों के जरिये दलित-आंदोलन की शुरुआत की गई। जिन सामाजिक आंदोलनों के जाति-प्रथा छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाई गई थी। महाराष्ट्र में 1870 के दशक में ज्योतिबा फूले तथा उनका संगठन सत्यशोधक समाज ने दलित-प्रतिशोध का एक नया दौर आरंभ किया। गेल ओम्बेदत्त ने अपनी महत्त्वपूर्ण कृति कल्चरक रिवोल्ट इन ए कोलोनियल सोसाइटी, दि नॉन ब्राह्मण मूवमॅट इन वेस्टर्न इण्डिया 1887-1930 में स्पष्ट किया है कि "दलित-प्रतिशोध आत्म-सम्मान के संघर्ष से जुड़ा हुआ था। बिहार में दलित आंदोलन, घनिष्टता, राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ा हुआ था। यह महात्मा गाँधी थे जिनकी प्रेरणा से 1922-34 के दौरान अस्पृश्यता-निवारण प्रबल आंदोलन बिहार में हुआ। कुँओं तथा तालाबों के जल के उपयोग के लिए लगी पाबन्दी तथा विद्यालय एवं मंदिरों के दरवाजे उनके लिए बन्द रहने के खिलाफ, चले लम्बे आंदोलन को कांग्रेस से ही बल प्राप्त हुआ था। दलितों के सामाजिक उत्थानों के लिए चले इस आंदोलन पर राष्ट्रीय आंदोलन के व्यापक प्रभाव को सहजता से परिलक्षित किया जा सकता है। महात्मा गाँधी द्वारा संस्थापित 'हरिजन सेवक संघ' ने दलितोद्धार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। अस्पृश्यता-निवारण आंदोलन, साइमन कमीशन और उसके बाद गोलमेज सम्मेलन, राष्ट्रीय स्तर पर दलित प्रश्न पर बहस बिहार में मंदिर-प्रवेश तथा अस्पृश्यता-निवारण विधेयक पर हुई गोलवन्दी और सर्वोपरि महात्मा गाँधी के हरिजन दौरे, उपवास आदि ने बिहार के दलित-समुदायों में राजनीतिक चेतना पैदा किया। बाबू जगजीवन राम ने 1936 में बिहार डिप्रेस्ड क्लासेज लीग की स्थापना 1936 में की। लीग ने 1937 में कॉंग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ा और बिहार में प्रान्तीय सरकार के गठन में हिस्सा लिया। 1937-39 के दौरान बाबू जगजीवन राम, जगलाल चौधरी, रघुनन्दन प्रसाद, रामप्रसाद, सुखारी राम, राम बसावन राम, शिवनन्दन राम, आदि दलित विधायकों ने बिहार व्यवस्थापित सभा में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। इनके अलावे भोला पासवान शास्त्री, भोला राउत, चन्द्रिका राम, भोला माँझी, नयनतारा, शान्ति कुमार, महावीर कुमार, जयदेव प्रसाद, आदि ने राष्ट्रीय आंदोलन के अन्तर्गत दलित-आंदोलन को औपनिवेशिक काल ही नहीं बल्कि आजादी के बाद भी बिहार में परवान चढ़ाया।

ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन और दलित-आंदोलन पर अलग-अलग कई स्वतंत्र अध्ययन हुए हैं, जिनमें एक-दूसरे के साथ अन्तः सम्बन्धों की थोड़ी बहुत जानकारी मिलती है। ऐसी पुस्तकों में प्रसन्न कुमार चौधरी और श्रीकान्त की 'बिहार में दलित आंदोलन (1912-2000)', पीपुल्स पब्लिकेशन, (दिल्ली, 2005), के0 के0 दत्त की 'बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास (भाग 1-3)', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, (पटना, 1998), कनक सिंह, 'हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार', मोतीलाल बनारसीदास, (पटना, 1991), के0 के0 दत्त द्वारा सम्पादित, कम्प्रेहन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार, जानकी प्रकाशन, (पटना, 2002), आर0 आर0 दिवाकर द्वारा सम्पादित 'बिहार थ्रू दि ऐजेज', मैकमिलन, (नई दिल्ली, 1959), पी0 एन0 ओझा की हिस्ट्री ऑफ इण्डियन नेशनल कांग्रेस इन बिहार, जानकी प्रकाशन, (पटना, 1985) जी0 पी0 शर्मा की 'कांग्रेस एण्ड द पीजेन्ट मूवमेंट इन बिहार, हिमालया, (बम्बई 1987), गिरीश मिश्र और ब्रज कुमार पाण्डे की 'बिहार में जातिवाद', अभिनव प्रकाशन (नई दिल्ली, 2010) आदि पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। इन पुस्तकों में राष्ट्रीय आंदोलन और दलित-समुदाय के अन्तः सम्बन्धों पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है, लेकिन किसी भी पुस्तक का केन्द्रीय विषय-वस्तु प्रस्तावित शोध शीर्षक नहीं है। जाहिर है कि प्रस्तावित शोध विषय पर अब तक कोई स्वतंत्र अध्ययन नहीं किया गया है।

इस आलेख का उद्देश्य दलित-समुदाय में चेतना के उदय तथा समुदाय का उत्थान में राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रवाद के योगदान का विवेचन करना है। यह गौरतलब है कि सशक्तिकरण की दिशा में गम्भीर प्रयत्न किए गए। उनके शारीरिक तथा सामाजिक, आर्थिक स्तर का ऊपर उठाने के लिए आरक्षण से लेकर अनेक प्रकार की योजनाओं, कार्यक्रमों आदि को क्रियान्वित किया गया और आज भी गम्भीर प्रयास जारी है, किन्तु दलित-समुदाय आज भी निर्धनता, अशिक्षा तथा बेरोजगारी का शिकार है। समाज के मुख्य-धारा में उन्हें सम्मानजनक स्थान दिलाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है, दलित-समुदाय के उत्थान के लिए किए गए प्रयत्नों का ऐतिहासिक अध्ययन किया जाय।

चूँकि प्रस्तुत शोध आलेख के विषय पर अब तक कोई स्वतंत्र अध्ययन नहीं हुआ है। अतः स्वाभाविक रूप से इसके सम्पन्न होने पर सम्बन्धित विषय के ज्ञान में अभिवृद्धि होगी। शोध-क्रम में नए तथ्य तथा आँकड़े व्याख्या हेतु हासिल होंगे, जिससे निश्चय ही ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार होगा। केन्द्रीय अध्ययन क्षेत्र बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन और दलित-समुदाय का इतिहास होगा, किन्तु स्तर तथा प्रादेशिक परिघटनाएँ परस्पर सम्बन्ध होती है और उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। फिर राजनीतिक परिघटना का सामाजिक आर्थिक परिस्थिति से जुड़ाव होता है। गौरतलब है कि बिहार में अम्बेडकर का दलित-समुदाय पर प्रभाव नगण्य था। दरअसल बिहार के दलित-समुदाय का राष्ट्रीय आंदोलन के साथ गठजोड़ था। प्रस्तुत आलेख राष्ट्रीय आंदोलन के साथ दलित-समुदाय के अन्तः सम्बन्धों के अध्ययन का एक विनम्र प्रयास है।

संदर्भ-सूची :

1. के0 के0 दत्ता, (सं.) : कम्प्रीहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार, जानकारी प्रकाशन, पटना, 2002
2. आर0 आर0 दिवाकर, (सं.) : बिहार थ्रू दि ऐजेज, मैकमिलन, नई दिल्ली, 1959
3. पी0 एन0 ओझा : हिस्ट्री ऑफ इण्डियन नेशनल काँग्रेस इन बिहार, जानकारी प्रकाशन, पटना, 1985
4. जी0 पी0 शर्मा : 'काँग्रेस एण्ड द पीजेन्ट मूवमॅट इन बिहार, हिमालया, बम्बई, 1987
5. गिरीश मिश्र और ब्रज कुमार पाण्डेय : 'बिहार में जातिवाद', अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

ISSN: 2350-1278

6. बाबा साहब अम्बेडकर : संपूर्ण वाङ्मय, खण्ड - 16, नई दिल्ली - 2000
7. महात्मा राम चरण कुरील : रविदास महिमा, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, 1988
8. यशोदा देवी : दुसाध समाज - एक समीक्षा, ममता प्रकाशन, इंटहरा (सहरसा), 1965
9. हेतुकर झा : प्रोमिजेज एण्ड लैप्सेज : अंडरस्टैडिंग दि एक्सपोरिएन्स ऑफ स्कूल ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमिक, खण्ड XII, 3-4 जुलाई, दिसम्बर 2000